शोध मंथन Vol. XIV No.I Jan.-Mar.2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

महापुराण में वर्णित आयुर्वेद चिकित्सा सम्बन्धी अवधारणा

प्राप्तिः 12.03.2023
स्वीकृतः 16.03.2023

आंचल सक्सेना
शोधार्थी, संस्कृत विभाग
एम०जे०पी० रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली
ईमेलः *anchal151190@gmail.com*

18

सारांश

भारतीय ज्ञान की अक्षुण्ण परम्परा में संस्कृत साहित्य का योगदान सर्वविदित एवं अद्वितीय ही है। यदि हमें भारतीय ज्ञान की अद्वितीय परम्परा से उचित प्रकार जानकारी प्राप्त करनी है तो बिना संस्कृत साहित्य के सम्भव नही है। संस्कृत साहित्य के प्रत्येक पक्ष ने मनुष्य के जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया है। संस्कृत वांग्मय को हम दो भागों में विभक्त कर सकते है–

1– वैदिक साहित्य, 2– लौकिक साहित्य

वैदिक साहित्य में वैदिक परम्परा से आर्विभूत समस्त वेद सम्बन्धी साहित्य उपलब्ध होता है। इसके अन्तर्गत चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, अर्थववेद, सामवेद) 4 उपवेद, उपनिषद ग्रन्थ आदि वर्णित किए गए है। वेद ऐसी ज्ञान राशि के भण्डार रूप है, जिसमें सभी विद्याओं का आधार छिपा हुआ है। वेदों के सरलतापूर्वक अनुशीलन हेतु ही चारों उपवेदों की रचना की गई जिनमें से ऋग्वेद का आयुर्वेद , यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गान्धर्ववेद व अथर्ववेद का अर्थवेद उपवेद के रूप में प्रतिष्ठित है।

वर्तमान युग भौतिकतावादी युग है, जहाँ विज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों में नित्य व नवीन प्रयोग व शोध हो रहे है, जिसने सम्पूर्ण सृष्टि एवं विश्व को नया आयाम भी प्रदान किया है, एक नए आयाम में, नए रूप को प्राप्त करने के बाद भी, सम्पूर्ण सृष्टि भारतीय संस्कृति के रूप मे मनुष्य के प्रत्येक जीवन सम्बन्धी पक्ष में अपनी गरिमा तथा प्रासंगिकता को प्रत्येक क्षण सिद्ध करती आ रही है। आज के युग मे भारतीय संस्कृति के प्रसारभूत स्वरूप भारतीय ज्ञान की प्रासंगिकता भी स्वतः ही सिद्ध है। फिर भी विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने एक बार फिर से इस आयुर्वेद सम्बन्धी ज्ञान की परम्परा को पुष्ट कर दिया है।

सुश्रुत संहिता, में आयुर्वेद की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है,

व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः,
स्वास्थ्यस्य स्वास्थ्यरक्षणं च आयुर्वेद।[1]

आयुर्वेद भारतीय आयुर्विज्ञान है, आयुर्विज्ञान विज्ञान की वह शाखा है जिसका सम्बन्ध मानव शरीर को निरोगी रखने, रोग हो जाने पर रोग से मुक्त करने अथवा उसका शमन करने तथा आयु बढ़ाने से है।

आयुर्वेदयति बोधयति इति आयुर्वेदः।[2]

अर्थात, जो शास्त्र आयु का ज्ञान कराता है, उसे आयुर्वेद कहते है।

चरक संहिता में भी आयुर्वेद को परिभाषित करते हुए कहा गया है,

हिताहितं सुखं दुखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मान च तच्च यक्तुक्तमायुर्वेदः स उच्यते।।[3]

आयुर्वेद के आदि आचार्य अश्विनी कुमार माने जाते है।

आयुर्वेद एक लोकोपयोगी जनजीवन से सम्बन्ध रखने वाला शास्त्र है। फलस्वरूप लौकिक विषयों से सम्बन्ध रखने वाले पुराणों में आयुर्वेद का विषय वर्णित होना स्वाभाविक है। आयुर्वेद में अनेक विभाग है जिसमें निदान (रोग निदान) तथा रोग की चिकित्सा मुख्य प्रतिपाद्य विषय है। विभिन्न प्रकार के रोगों के निवारण हेतु विभिन्न प्रकार की औषधियों का स्वरूप तथा उनके गुणों का परिचय पुराणों में विस्तृत एवं स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट है विशेषकर विश्वज्ञान कोशीय स्वरूप प्राप्त अग्निपुराण, गरूड़पुराण में आयुर्वेद का वर्णन प्रचुरता से उपलब्ध होता है।

अग्निपुराण में अनेक विद्याओं का सुन्दर समावेश है। इस पुराण के सन्दर्भ में पुराणकार का कथन है–

आग्नेये हि पुराणेऽस्मिन् सर्वा विद्याः प्रदर्शिताः।[4]

अर्थात इस आग्नेय (अग्नि) पुराण में सभी विद्याओं का वर्णन है।

अग्निपुराण के 279वें अध्याय से 300 वें अध्याय तक विभिन्न रोग, रोगलक्षण तथा उपचारार्थ औषधियों का विषद विवेचन प्राप्त होता है। 279वें अध्याय में सिद्ध औशिधियों का निरूपण किया गया है।

अग्निपुराण में वर्णित है–

आयुर्वेद प्रवक्ष्यामि सुश्रुताय यमब्रवीत्।
देवों धन्वन्तरिः सारं मृत सज्जीवनी करम।।[5]

अग्नि वशिष्ट जी से कहते है कि अब मै उस आयुर्वेद का वर्णन कर रहा हूँ जिसको भगवान धन्वन्तरी ने सुश्रुत को उपदेश दिया था। यही आयुर्वेद का सार है और मृत पुरूष को भी जीवित बना देता है।

सुश्रुत उवाच–

आयुर्वेदं मम ब्रूहि नराश्रेभरूर्गदनम्।
सिद्धयोगान् सिद्धमन्त्रान् मृत सज्जीवनीकरान्।।[6]

अर्थात सुश्रुत धन्वन्तरी से कहते है कि आप मुझे मनुष्य, घोड़े तथा हाथी के रोगों को दूर करने वाले आयुर्वेद के विशय मे बताइए। अग्निपुराण में मानव के हितकारी आयुर्वेद के अतिरिक्त वृक्ष, गौ, अश्व, गज आदि के रोगों उन रोगों के निदान एवं स्वरूप का वर्णन देखने को मिलता है जिसमें सर्वप्रथम वृक्षायुर्वेद का स्वरूप व उनके रोग व शमन स्वरूप को बताते है –

वृक्षायुर्वेद का वर्णन करते हुए धन्वन्तरी सुश्रुत से कहते है–

वृक्षायुर्वेदमाख्यास्ये प्लक्षच्श्रोत्तरतः शुभः।
प्राग्वटो याम्यतस्त्वाम्र आप्ये अश्वत्थः क्रमेणतु।।[7]

अर्थात धन्वन्तरी कहते है कि गृह के उत्तर में पाकड़ का पेड़ शुभ होता है, पूर्व दिशा में वट, दक्षिण दिशा में आम और पश्चिम दिशा में पीपल का वृक्ष शुभ माना जाता है।

अग्निपुराण में ही मनुष्य की आयु बढ़ाने वाली औषधियों का वर्णन किया गया है–

कल्पान्मृत्यु जयान्वक्ष्ये हिआयुर्दान्रोगमर्दनान्।
त्रिशती रोगहास व्यामध्वाज्य त्रिफलामृता।।
परंपलार्द्धकर्ष वात्रिफलांस कंटग तथा।
बिल्व तैलस्य नस्यज्च मांस पंचशतीकविः।।[8]

धन्वन्तरी सुश्रुत से कहते है कि मृत्यु जय कल्पों का वर्णन करता हूँ जो आयु देने वाले तथा सभी प्रकार के रोगों का मर्दन करने वाले है ।

तीन सौ वर्ष की आयु देने वाली मधु, घी, त्रिफला तथा गिलोय का औषधि रूप में सेवन करना लाभ दायक होता है।

चार तोले, दो तोले अथवा एक तोले की मात्रा में प्रतिदिन त्रिफला के सेवन से भी वही फल देता है। एक मास तक बिल्व तैल का नस्य लेने से पाँच सौ वर्ष की आयु एवं कवित्व शक्ति प्राप्त होती है।

अग्निपुराण के 294वें अध्याय में नागों का लक्षण, उनके भेद तथा सर्पदंश के समय तिथि तथा नक्षत्र के फल का वर्णन किया गया है।

अग्निपुराण में वर्णन प्राप्त होता है–

घृत के साथ गोबर के रस का पान करने से साँप से डसे हुए मनुष्यों के जीवन की रक्षा होती है।

विष्णुपुराण में वर्णित कथा के अनुसार नागराजों ने नर्मदा को वरदान दिया था, जो कोई तेरा स्मरण करते तेरा नाम लेगा, उसको सर्प विष से कोई भय नही होगा।

नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि।
नमो स्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विष सर्पतः।।9

गरूण पुराण में विष्णु ने गरूड़ को विश्व की सृष्टि बतायी गयी है इसलिये इसका नाम गरूड़ पुराण अभिहित हुआ।

आयुर्वेद के आवश्यक निदान तथा चिकित्सा का वर्णन अनेक अध्यायों के अन्तर्गत किया गया है।

गरूड़ पुराण के आचार काण्ड के अन्तर्गत आयुर्वेद सम्बन्धी प्रकरण उपलब्ध होता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि आयुर्वेद की भूमिका देखी जाए तो इसकी भूमिका मानव जीवन के लिए संजीवनी के रूप में सिद्ध हुई है। वर्तमान समय में कोविड–19 के प्रकोप से विश्व की पूरी मानवता ग्रस्त है अनुकूलतम स्वास्थ्य बनाए रखने में शरीर की प्राकृतिक रक्षा प्रणाली रोग प्रतिरोधक क्षमता महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

आयुर्वेद जीवन का विज्ञान होने के नाते स्वस्थ्य एवं सुखी जीवन के लिए प्राकृतिक उपहारों का प्रचार करता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि आयुर्वेद प्राकृतिक एवं समग्र स्वास्थय की पुरातन भारतीय चिकित्सा पद्धति है।

सन्दर्भ

1. सुश्रुत संहिता 1/12
2. सुश्रुत संहिता
3. चरक सहिंता
4. अग्निपुराण 383/51
5. अग्निपुराण 279/1
6. अग्निपुराण 279/2
7. अग्निपुराण 282/1
8. अग्निपुराण 286/1,2
9. विष्णुपुराण 4/3/13